महात्मा गांधी का हिन्द स्वराज विविध आयामों से ओतप्रोत

डॉ. पप्पूराम कोली, 'व्याख्याता' राजनीति विज्ञान
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सवाई माधोपुर (राजस्थान)

महात्मा गांधी के विचार का दर्शन राजनीतिक चिन्तन का एक विलक्षण प्रयोग है। आध्यत्मिक प्रेरणाओं और सांसारिक तत्वों के विलक्षण समन्वय के द्वारा गांधी ने राजनैतिक दर्शन को ऐसा नवीन आयाम प्रदान कर दिया है कि उनकी विचारधारा राजनैतिक और आर्थिक चिन्तन के परम्परागत वर्गीकरणों व्यक्तिवाद या समष्टिवाद, उदारवाद या समाजवाद, पूंजीवाद या साम्यवाद की परिधि में बांधना संभव नहीं है ।

महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक हिन्दू स्वराज्य को 20 अध्यायों में लिखा जो गांधी जी ने 1909 में विलायत से लौटते समय लिखी थी। इस पुस्तक में उन्होनें भारत में कांग्रेस के कार्यकलापों, बंगाल विभाजन, अंशातिय, अंसतोष, स्वराज्य क्या है ? इंग्लैंड के हालात, पश्चिमी सभ्यता व उसके दर्शन, हिन्दुस्तान की दशा का विस्तृत वर्णन किया गया है। गांधी जी ने सच्ची सभ्यता कौनसी व कैसी है ? हिन्दूस्तान को आजादी कैसी मिली ? आन्दोलन व स्वराज्य के लिये गोला बारूद की भूमिका सत्याग्रह एक आत्मबल है जिससे आजादी प्राप्त करनी चाहिए, पाश्चात्य व बुनियादी शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा पर बल दिया है। मशीनों व यंत्रों का विवरण व उसके खतरों के प्रति सजग किया गया है व पश्चिम शिक्षा, सभ्यता, मशीनों व यंत्रों से छूटकारें के लिये सजग किया हैं।

गांधी जी ने अपनी पुस्तक "हिन्द स्वराज्य" के बारे में कहा है कि "मेरी यह छोटी सी किताब इतनी निर्दोष है कि बच्चों के हाथ में भी यह दी जा सकती हैं। यह किताब देश धर्म की जगह प्रेम धर्म सिखाती है, हिसां की जगह आत्मबलिदान को स्थापित करती है और पशु बल के खिलाफ टक्कर लेने के लिए आत्मबल को खड़ा करती है।"

गांधी जी ने कहा है कि भारत से अंग्रेजो का चला जाना व भारतीयों को सत्ता सौपनां ही स्वराज्य नहीं है बल्कि भारतीयों में भी अंग्रेजी यत व्यवहार को बदलना भी आवश्यक होगा तभी वास्तविक स्वराज्य प्राप्त हो पायेगा। हमें अपनी आत्मा को बचाना चाहिए। गांधीजी के सारे जीवन कार्य के मूल्य में जो श्रद्धा काम करती रही वह सारी हिन्द स्वराज्य में पाई जाती

है। इसलिए गांधी जी के विचार सागर में इस छोटी ही महत्व असाधारण है। स्वराज्य के लिये अन्य आय का शोषण का और परदेशी सरकार का विरोध करने में अहिंसा का सहारा लिया जायें इतना एक ही आग्रह उन्होनें रखा है। इस अमर किताब का स्थान तो भारतीय जीवन में हमेशा के लिये रहेगा ही ।

जिराल्ड हर्डने ने कहा है कि "गांधीजी के प्रयोग में सारे जगत को दिलचस्पी है और उसका महत्व युगों तक कायम रहेगा। इसका कारण यह है कि उन्होनें समूह को लेकर या राष्ट्रीय पैमाने पर उसका प्रयोग करने की कोशिश की हैं।

स्वराज्य संबंधी विचार –

स्वराज्य एक पवित्र शब्द है। वह एक वैदिक शब्द है जिसका अर्थ आत्म शासन और आत्म संयम है। गांधीजी ने स्वराज्य का अभिप्राय लोक सहमति के अनुसार होने वाला भारतवर्ष का शासन बताया है। लोक सहमति का निश्चय देश के बालिग लोगों की बड़ी से बड़ी तादात के मत के द्वारा हो, फिर वे चाहे स्त्रियां हो या पुरुष व ऐसे हो जिन्होनें अपने शारीरिक श्रम के द्वारा राज्य की कुछ सेवा की हो। सच्चा स्वराज्य थोडे लोगों के द्वारा सत्ता प्राप्त कर लेने से नहीं बल्कि जब सत्ता का दुरूपयोग होता तो तब सब लोगों के द्वारा उसका प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त करके हासिल किया जा सकता हैं। जिस प्रकार हर देश खाने–पीने और श्वास लेने के लायक है उसी प्रकार हर राष्ट्र को अपना शासन चलाने का पूरा अधिकार है, फिर वह कितनी ही बुरी तरह क्यों न चलायें ।

गांधी जी ने कहा है कि हमारी शासन पद्धति हमारी प्रजा की प्रकृति के अनुरूप होनी चाहिए। राजनैतिक स्वतंत्रता से मेरा यह मतलब नहीं है कि हम पाश्चात्य (ब्रिटिश, फ्रांस, जर्मनी, इटली, रूस) शासन की नकल करें। स्वराज्य का अर्थ है सरकारी नियत्रंण से मुक्त होने के लिये लगातार प्रयास करना। चाहे नियंत्रण विदेशी सरकार का हो' या स्वदेशी सरकार का यदि स्वराज्य हो जाने पर लोग अपने जीवन की हर छोटी बात के नियमन के लिये सरकार का मुंह ताकना शुरू कर दे, तो वह स्वराज्य सरकार किसी काम की नही होगी। गांधी का स्वराज्य तो हमारी सभ्यता की आत्मा को अक्षुण्ण रखना है। गांधी के स्वराज्य में जाति या धर्म के भेदों को कोई स्थान नहीं हो सकता। उस पर शिक्षितों या धनवानों का एकाधिपत्य नही होगा। वह स्वराज्य सबके लिये और सबके कल्याण के लिये होगा। पूर्ण

स्वराज्य का अर्थ है भारत के नर कंकालों का उद्धार । पूर्ण स्वराज्य ऐसी स्थिति का घोतक है जिसमें गूंगे बोलने लगते है और लंगड़ें चलने लगते हैं। स्वराज्य में जनता में जागृति होनी चाहिए उन्हें अपने सच्चे हित का ज्ञान होना चाहिए। और सारी दुनिया के विरोध का सामना करके भी उस हित की सिद्धी के लिये कोशिश करने की योग्यता होनी चाहिए और यदि पूर्ण स्वराज्य के द्वारा हमे सुमेल भीतरी या बाहरी आक्रमण से रक्षा और जनता की आर्थिक स्थिति में उत्तरोत्तर सुधार चाहते हों, तो हम अपना उद्देश्य राजनैतिक सत्ता के बिना ही सत्ता जिनके हाथ में हो उन पर अपना सीधा प्रभाव डालकर सिद्ध कर सकते है।

सभ्यता संबंधी विचार –

सभ्यता से गांधी जी का आशय बाहरी दुनिया की खोजों में और शरीर के सुख में सार्थकता और पुरुषार्थ मानते हैं। सभ्यताओं ने मानव जीवन की दशा को धन्यता बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। यह सभ्यता की निशानी मानी जाती है, "पहले लोग खुली हवा अपने को ठीक लगे उतना काम स्वतंत्रता से करते थे। अब हजारों आदमी अपने गुजारें के लिये इकट्ठा होकर बड़े कारखानों या खानों में काम करते हैं, उनकी हालत जानवरों से बदतर हो गई हैं। उन्हें सीसे वगैरा के कारखानों में जान को जोखिम में डालकर काम करना पड़ता है। इसका लाभ पैसेदार लोगों को मिलता है। पहले लोगों को मारपीट कर गुलाम बनाया जाता था। आज लोगों को पैसे का और लोभ का लालच का देकर गुलाम बनाया जाता है। पहले जैसे रोग नहीं थे वैसे आज लोगों में पैदा हो गये है और उसके साथ डाक्टर खोज करने लगे हैं कि यह रोग कैसे मिटाएं जाएं ऐसा करने से अस्पताल बढ़े हैं। सभ्यता वह आचरण है जिसकी जिससे आदमी अपना फर्ज अदा करता है फर्ज अदा करने के मानी है नीती का पालन करना। नीती के पालन का मतलब है अपने मन और इन्द्रियों का बस में रखन ऐसा करते हुए हम अपने को अपनी असलियत को पहचानते है यही सभ्यता है। इससे जो उल्टा है वह बिगाड़ करने वाला है।

हिन्दुस्तान की दशा –

हिन्दुस्तान की दशा पर गांधी जी की आंखों में पानी भर आता था और गला सूख जाता था। हिन्दुस्तान की दूर्दशा के लिये गांधी जी अंग्रेजो को नही अपितु सभ्यता को जिम्मेदार मानते है जिसकी चपेट में भारत फंस गया है। उसमें से बचने का अभी भी उपाय है

लेकिन दिन व दिन बितता जा रहा है मुझ तो धर्म प्यारा है। इसलिए पहला दुःख मुझे यह है कि हिन्दुस्तान धर्मभ्रष्ट होता जा रहा हैं धर्म का अर्थ में यहां हिन्दु–मुस्लिम या जत्थोस्ती धर्म नहीं करता, लेकिन इन सब धर्मो के अन्दर जो धर्म है वह हिन्दुस्तान से जा रहा है, हम ईश्वर से विमुख होते जा रहे हैं।

सत्यागृह–

सत्यागृह के बारे में गांधीजी का कहना है, "सत्यागृह ऐसी तलवार है जिसके दोनों और धार है उसे चाहे जैसे काम में लिया जा सकता है जो उसे चलाता है और जिस पर वह चलाई जाती है वे दोनों सुखी होते हैं। वह खून नही निकालती लेकिन उससे भी बड़ा परिणाम ला सकती है उसकों जंग नहीं लग सकती है, उसे कोई चूरा कर नहीं ले जा सकता। अगर सत्यागृही दूसरे सत्यागृही के साथ होड में उतरता है तो उसमें उसे थकान लगता ही नहीं। सत्यागृही की तलवार को म्यान की जरूरत नहीं रहती। उसे कोई छिन नही सकता। फिर भी सत्यागृह को आप कमजोरों का हथियार माने तब तो उसे अंधेरा ही कहा जायेगा।

दुनिया में इतने लोग आज भी जिन्दा है यह बताता है कि दुनिया का आधार हथियार – बल पर नहीं है परन्तु सत्य, दया या आत्मबल पर है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि दुनिया लड़ाई के हंगामें के बावजूद टिकी हुई हैं। इसलिए लड़ाई के बल के बजाय दूसरा ही बल उसका आधार है। हजारों बल्कि लाखों लोग प्रेम के बस रहकर अपना जीवन बसर करते हैं करोड़ों कुटुम्बों का कलेश प्रेम की भावना में समा जाता हैं, डूब जाता है। सैकड़ों राष्ट्र मेल जोल से रह रहे हैं, इसकों हिस्ट्री नोट नहीं करती, कर भी नहीं सकती हैं। जब इस दया की, प्रेम की और सत्य की धारा रूकती है।

शिक्षा सम्बन्धी विचार –

गांधी जी के अनुसार शिक्षा का साधारण अर्थ अक्षरज्ञान ही होता है। लोगों को लिखना पढ़ना, हिसाब करना, सिखाना बुनियादी या प्राथमिक–प्रायमरी शिक्षा कहलाती है। शिक्षा के दुरूपयोग के बारे में गांधी जी शिक्षा को एक साधन के रूप में मानते है। उसका अच्छा उपयोग हो सकता है। एक शस्त्र से चीर–फाड़ करके बीमार को अच्छा किया जा सकता है।

और वह शस्त्र किसी की जान लेने के लियें काम में लाया जा सकता है। अक्षर ज्ञान ही ऐसा ही है। बहुत से लोग उसका बुरा उपयोग भी करते हैं। गांधी जी अंग्रेजी शिक्षा का विरोध करते हैं। अंग्रेजी शिक्षा लेकर हमने राष्ट्र को गुलाम बनाया हैं। अंग्रेजी से शिक्षा से दंभ, राग, जुल्म वगैरा बढ़े है अंग्रेजी शिक्षा पाये हुये लोगों ने प्रजा को ठगने में, उसे पेरशान करने में कुछ भी उठा नहीं रखा है। अब अगर हम अंग्रेजी शिक्षा के पाये हुए लोग उसके लिये कुछ करते हैं तो उसका हम पर जो कर्ज चढ़ा हुआ है उसका कुछ हिस्सा भी हम अदा करते हैं।

गांधी जी धर्म की शिक्षा या नीति की शिक्षा दी जाने के पक्ष में थे। हर एक पढे लिखे हिन्दूस्तानी को अपनी भाषा का हिन्दु को संस्कृत का, मुसलमानों को अरबी, पारसी को फारसी और सबको हिन्दी का ज्ञान होना चाहिए। कुछ हिन्दूओं को अरबी, कुछ मुसलमानों और पारसियों को संस्कृत सिखनी चाहिए। उत्तरी और पश्चिमी हिन्दुस्तान के लोगों को तमिल सिखनी चाहिए। सारे हिन्दुस्तान के लिये जो भाषा चाहिए वह हिन्दी ही होनी चाहिए। उर्दू या नागरी लिपी में लिखने की छूट रहनी चाहिए। हिन्दु–मुसलमानों के सम्बन्ध ठीक रहें इसलिए बहुत से हिन्दुस्तानियों का इन दोनों लिपियों को जान लेना जरूरी है। ऐसा होने पर हम आपस के विचार में अंग्रेजी को निकाल सकेंगें।

यत्रों / मशीनों का विरोध –

गांधी जी ने कहा मेरा विरोध यंत्रों के लिये नहीं है बल्कि यंत्रों के पीछे जो पागलपन चल रहा है उसके लिये है। आज तो जिन्हे मेहनत बचाने वाले यंत्र कहते हैं, उनके पीछे लोग पागल हो गये हैं। उनसे मेहनत जरूरत बचती है, लेकिन लाखों लोग बेकार होकर भूख से मरते हुए रास्तों पर भटकतें है। समय और श्रमिक की बचत तो मैं भी चाहता हूं परन्तु वह किसी खास वर्ग की नहीं, बल्कि सारी मानव–जाति की होनी चाहिए। कुछ गिने–गिनायें लोगों के पास सम्पत्ति जमा हो ऐसा नहीं बल्कि सबसे पास जमा हो ऐसा मैं चाहता हूं। आज तो करोड़ों की गर्दन पर कुछ लोगों के सवार हो जाने में यंत्र मददगार हो रहे हैं, यंत्रों के उपयोग के पीछे जो प्रेरक कारण है व श्रमिक की बचत नहीं, बल्कि धन का लोभ है। आज की इस चालू अर्थव्यवस्था के खिलाफ मैं अपनी तमाम ताकत लगातर युद्ध चला रहा हूं।

गांधी जी की "हिन्द स्वराज्य पुस्तक का विवचेन निष्कर्ष रूप में निम्नाकिंत किया जा सकता है–

1. हिन्द स्वराज्य विविध आयामों से परिपूर्ण है, जिसमें विभिन्न विषयों पर गांधी जी ने बेवाक टिप्पणीयां की हैं।
2. गांधी जी ने स्वराज्य को सर्वश्रेष्ठ शासन माना है। गांधी जी के स्वाराज्य में आम आदमी को पूर्ण स्वतंत्रता देने के पक्ष में तथा उसके जीवन के चहुंमुखी विकास की ओर ध्यान दिया गया हैं।
3. गांधी जी सत्यागृह को साधन के रूप में मानते हैं। सत्यागृह आत्मबल है, जिससे जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहयोग मिलता है।
4. गांधी जी यंत्रों, मशीनों को विकास की राह में रोडा मानते थें। उन्हें गरीबों का शोषण तथा अमीरों के लाभ का साधन मानते थें। मशीनों से बेरोजगारी बढ़ने के खतरों को भली प्रकार जानते थें।
5. गांधी जी पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभावों को भारतीय संस्कृति पर नहीं पड़े से बचाने हेतु निरन्तर प्रतिशील रहते थें ।
6. गांधी जी पाश्चात्य शिक्षा के कट्टर विरोधी थें। उन्होनें पाश्चात्य शिक्षा के बजाय भारतीय शिक्षा साक्षर या प्राइमरी स्कूल को ही महत्व दिया। गांधी जी ने धर्म की शिक्षा व नैतिक शिक्षा को अधिक महत्व दिया।
7. गांधी जी ने हिन्दूस्तान की दूर्दशा के लिये पाश्चात्य सभ्यता को जिम्मेदार ठहराया है न कि अंग्रेजों को पाश्चात्य सभ्यता के मोहजाल में भारतीय जन मानस फसता जा रहा था। जिससे भारतीय सभ्यता विलोपित होती जा रही थीं।
8. गांधी जी ने भारतीय विकास में सबसे बड़ी बाधा रेल, वकील व डॉक्टर को माना है।
9. हिन्दूस्तान की दशा को सुधारने में हिन्दु–मुस्लिम का योगदान हो सकता है यदि दोनों कौम मिलकर हिन्दुस्तान की तरक्की के बारें में सोचें तो यह मुल्क दुनिया के सभी मुल्कों को विकास की गति में पछाड़ सकता है।
10. जीवन में नैतिकता एंव मूल्यों पर आधारित आचरण